Journal of Socio-Educational & Cultural Research
International Journal of Arts & Social Sciences
Peer Reviewed Refereed Journal
Published by Srijan Research Foundation, Varanasi India
DOI: https://doi.org/10.68868/14Js15aK40
www.jsecrjournal.in

हिन्दू - संस्कार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शिव प्रसाद,
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (समाजशास्त्र विभाग),
के०बी० पी०जी० कॉलेज मीरजापुर,
E-mail : myshivprasad@gmail.com

सारांश :

आचार्य चाणक्य ने संस्कारों के विषय में कहा है कि बाल्यकाल में डाले गए संस्कार ही व्यक्ति का भविष्य बनाते हैं| संस्कार एक शुद्धि की क्रिया है जिसका संबंध व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक शुद्धिकरण के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों से है| व्यक्ति इन अनुष्ठानों के द्वारा ही शुद्ध और संस्कृत होता है तथा मनुष्यत्व को प्राप्त करता है| प्राचीन काल से ही संस्कार धार्मिक तथा सामाजिक एकता के प्रभावकारी माध्यम रहे हैं| सुदूर अतीत काल से प्रारंभ होकर अनेक परिवर्तनों के साथ ये आज भी जीवित है| अपने अंदर समाहित धार्मिक एवं वैज्ञानिक एकता के कारण ऐसा जान पड़ता है कि भविष्य में भी इनका अस्तित्व बना रहेगा| जब स्वास्थ्य-विज्ञान और प्रजनन-शास्त्र आम जनमानस तक नहीं पहुंचता था, उस समय यह संस्कार ही इन विषयों पर ज्ञान कराते थे| विद्यारम्भ, उपनयन तथा समावर्तन आदि संस्कार शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व के थे| आदिम समाजों में अनिवार्य शिक्षा को लागू करने के लिए कोई धर्मनिरपेक्ष माध्यम नहीं था ये संस्कार ही शिक्षा की अनिवार्यता को प्रस्तुत करते थे| शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से अयोग्य बालक को भी शिक्षा के अनिवार्य पाठ्यक्रम से होकर गुजरना पड़ता था, जिसमें अध्ययन तथा कठोर अनुशासन का समावेशन था| विवाहों के प्रकार, उसकी सीमाएं, वैवाहिक विधि-विधान आदि स्त्री-पुरुषों में यौन समस्या तथा अन्य सामाजिक समस्याओं का नियमन करते थे| अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि मृतक तथा जीवन के प्रति गृहस्थ के कर्तव्यों में सामंजस्य स्थापित करते थे| इस प्रकार संस्कारों का यह पुंज मानवजीवन तथा उनके विकास के लिए एक क्रमबद्ध योजना का कार्य करते थे| सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण के बावजूद भी मनुष्य जीवन के लिए जीवन का यह संस्कार सदा अपेक्षित रहेगा, संस्कारों की प्राचीन रूपरेखा में परिवर्तन तो होगा, लेकिन समय की आवश्यकता के अनुरूप संस्कारों का नवीन रूप भी प्राप्त होता रहेगा| समाज के विचारक वर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे मानव जीवन के लिए धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा करें|

मुख्य शब्द : हिन्दू संस्कार, षोडश संस्कार, सामाजिक-सांस्कृतिक रीती रिवाज, अनुष्ठान संस्कार, विश्लेषणात्मक अध्ययन |

संस्कार किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण अंग होते हैं| प्राचीन काल से ही संस्कार धार्मिक तथा सामाजिक एकता के प्रभावकारी माध्यम रहे हैं| सुदूर अतीत काल से प्रारंभ होकर अनेक परिवर्तनों के साथ आज भी जीवित है| अपने अंदर समाहित धार्मिक एवं वैज्ञानिक एकता के कारण ऐसा जान पड़ता है कि भविष्य में भी इनका अस्तित्व बना रहेगा| प्राचीन काल में जब जीवन धर्म से

अधिकाधिक प्रभावित था तब व्यक्ति पर संस्करोपड़ का कार्य पुरोहित और मठ किया करते थे| आधुनिक युग में इस काम को राज्य, गैर सरकारी संस्थाएँ आदि अपने हाथ में लेती जा रही है जो संस्कारों के स्वरूप में नित नए-नए परिवर्तन करती जा रही है| परिणामस्वरूप आज उपयोग में आने वाले संस्कारों की संख्या दिनों दिन कम होती जा रही है| इसका मुख्य कारण यह भी है कि संस्कार किसी विशेष लिखित विधान की अपेक्षा प्राचीन तथा लोक प्रचलित परंपरा और प्रथाओं पर आधारित थे| वर्तमान संस्थाएं उन प्रथाओं को अनुपयोगी मानकर भूलती जा रही है| जहाँ तक संस्कारों के विस्तार और नियमन का संबंध है वहाँ यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वेदों, ऋचाओं, कर्मकांड-साहित्य, स्मृतियों और धर्मसूत्रों आदि में संस्कार के प्रासंगिक सूक्तो का उल्लेख किया गया है| उदाहरणार्थ ऋग्वेद में स्त्री, संतति तथा गृहस्थ जीवन के लिए उपादेय सामग्री से सम्पन्न पुत्र तथा पौत्रों के साथ शतायु की एवं संततिघाती राक्षस के विनाश की प्रार्थना की गई है| इसके अतिरिक्त संस्कारों के सामाजिक जीवन से सम्बद्ध अनेक निर्देश भी ऋग्वेद में उपलब्ध है| प्राचीन हिंदू समाज में ऐसी मान्यता थी कि आराधना और प्रार्थना के माध्यम से मनुष्य की सारी इच्छाओं और आकांक्षाओं को देवता जान लेते थे और पशु, संतान, अन्न, स्वास्थ्य, सुंदर शरीर और तीक्ष्ण बुद्धि के रूप में उनकी पूर्ति करते थे| पुरोहित संस्कारों के माध्यम से जनसाधारण की इन भौतिक आकांक्षाओं को प्रश्रय देता और उन्हें सिद्ध करने का प्रयास करता|

संस्कारों का उदय वैदिक काल या उससे भी पूर्व हो चुका था, जैसा कि वेदों में उल्लिखित कर्मकांडीय मंत्रों से विदित होता है किंतु वैदिक साहित्य में संस्कार शब्द का उल्लेख नहीं मिलता है| यद्यपि इसके विशेष प्रकरणों में उपनयन, अंत्येष्टि आदि संस्कारों के अंगों का वर्णन मिलता है| संस्कार शब्द की वियुत्पत्ति संस्कृत के सम पूर्वक 'कुञ्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करके की गई है| (सम+कृ+घञ् = संस्कार) संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है| **अद्वैतवेदांती** जीव पर शारीरिक क्रियाओं के मिथ्या आरोप को संस्कार मानते हैं| **नैयायिक** भावों को व्यक्त करने की आत्म-व्यंजक शक्ति को संस्कार मानते हैं| **संस्कृत-साहित्य** में संस्कार शब्द का प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, पूर्णता, शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, आभूषण, शोभा, शुद्धि-क्रिया आदि अनेक अर्थों में किया जाता है|

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार की परिभाषा देते हुए कहा है कि 'संस्कार वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य के चित्त में शुभ गुणों की वृद्धि और अशुभ गुणों की निवृत्ति होती है|' **महात्मा गाँधी** ने संस्कार के विषय में कहा कि 'अच्छे संस्कार व्यक्ति को आत्मानुशासित और समाजोपयोगी बनाते हैं|' **स्वामी विवेकानंद** के मतानुसार 'संस्कार मनुष्य के अवचेतन मन में अंकित प्रभाव है, जो उसके विचारों और कर्मों को दिशा देते हैं|' भारत के पूर्व राष्ट्रपति और दार्शनिक **डॉ एस. राधाकृष्णन** ने कहा है कि 'संस्कार वह आधार है जिस पर नैतिकता, संस्कृति और सभ्यता की नींव रखी जाती है|' गायत्री परिवार के संस्थापक **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य** का मानना है कि 'संस्कार आत्मा की खेती है, जैसा बीज बोओगे, वैसा ही फल पाओगे|' **आचार्य चाणक्य (कौटिल्य)** ने संस्कारों के विषय में कहा है कि 'बाल्यकाल में डाले गए संस्कार ही व्यक्ति का भविष्य बनाते हैं|'

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है, कि संस्कार एक शुद्धि की क्रिया है जिसका संबंध व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक शुद्धिकरण के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों से है| व्यक्ति इन अनुष्ठानों के द्वारा ही शुद्ध और संस्कृत होता है तथा मनुष्यत्व को प्राप्त करता है| कहा जाता है कि **"जन्मना जायते शूद्र: संस्काद् द्विज उच्यते"** अर्थात जन्म से प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है, संस्कारों के द्वारा वह द्विज (श्रेष्ठ) कहलाता है| संस्कार कोई एक अनुष्ठान नहीं है बल्कि यह कई अनुष्ठानों का एक संग्रह है, जो जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त क्रमशः किया जाता है| संस्कारों की संख्या के संबंध में विद्वानों में एक मतता नहीं है बल्कि भिन्न-भिन्न विचारको एवं सूत्रों ने संस्कारों की संख्या अलग-अलग बताई है| उदाहरणस्वरूप आश्वलायन गुह्य सूत्र में 11 संस्कार, पाराशर गुह्य सूत्र में 13 संस्कार, बौधायन गुह्य सूत्र में भी 13 संस्कार, वाराह गुह्य सूत्र में 13 संस्कार, वैखानस गुह्य सूत्र में 18 संस्कार, और गौतम धर्मसूत्र आठ आत्मगुणों के साथ 40 संस्कारों की सूची प्रस्तुत करता है| महर्षि मनु ने गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त कुल 13 संस्कार बदलाए है, व्यास स्मृति में कुल 16 संस्कारों की गणना मिलती है, जातुकण्य भी 16 संस्कारों की सूची प्रस्तुत करते हैं| इस विवेचन से स्पष्ट है कि विभिन्न ग्रंथों में संस्कारों की संख्या भिन्न-

भिन्न है, संप्रति सर्वाधिक लोकप्रिय संस्कार 16 है| आधुनिक समय में यह 16 संस्कारों की सूची लगभग सभी ने स्वीकृति प्रदान की है| स्वामी दयानन्द सरस्वती की संस्कार-विधि और पंडित भीमसेन शर्मा की षोडश संस्कार-विधि में भी इन 16 संस्कारों का समावेशन है| ये संस्कार क्रमशः अग्रलिखित है-

1- गर्भाधान संस्कार, 2- पुंसवन संस्कार, 3- सीमांतोन्नयन संस्कार, 4- जातकर्म संस्कार, 5- नामकरण संस्कार, 6- निष्क्रमण संस्कार, 7- अन्न प्रासन संस्कार, 8- चूड़ाकर्म संस्कार, 9- कर्णवेध संस्कार, 10- विद्यारंभ संस्कार, 11- उपनयन संस्कार, 12- वेदारंभ संस्कार, 13- केशांत संस्कार, 14- समावर्तन संस्कार, 15- विवाह संस्कार, 16- अन्त्येष्टि संस्कार|

जन्म के पूर्व से मृत्युपर्यंत चलने वाले इन संस्कारों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है- **प्रथम** प्राग-जन्म संस्कार, इसके अंतर्गत प्रथम तीन संस्कार समाहित किये गए हैं| **द्वितीय** वाल्यावस्था के संस्कार, इसके अंतर्गत 4,5,6,7,8 और 9 वां संस्कार आते हैं| **तृतीय** शैक्षणिक संस्कार, इसके अंतर्गत 10,11,12,13 और 14 वां संस्कार आता है| **चतुर्थ** इसके अंतर्गत केवल 15 वां संस्कार आता है| और अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि है| इन षोडश संस्कारों की विस्तृत व्याख्या अग्रलिखित है-

गर्भाधान संस्कार- मानव का संपूर्ण जीवन संस्कारों में ही समाहित है अतः प्रजनन भी इसके अंतर्गत आ जाता है| धर्मशास्त्रों के अनुसार जिस कर्म के द्वारा एक पुरुष स्त्री में अपना बीज (शुक्र) स्थापित करता है उसे गर्भाधान कहते हैं, इस क्रिया के लिए आर्यों ने कुछ नियम बनाए थे इन नियमों के आधार पर ही पुरुष-स्त्री समागम की बात की गयी थी| वैदिक काल में वीर एवं ऋणों से उऋण करने वाला पुत्र देवताओं का वरदान माना जाता था| अथर्ववेद के एक मंत्र में गर्भधारण करने के लिए स्त्री को पर्यणक पर आने के लिए निमंत्रण का उल्लेख है- 'प्रसन्नचित्त होकर शैया पर आरुण हो और मुझ अपने पति के लिए संतति उत्पन्न करो|' सभी धर्मशास्त्र इस बात पर एकमत हैं कि गर्भाधान संस्कार उस समय हो जब स्त्री शारीरिक रूप से समर्थ हो| पत्नी के ऋतु स्नान की चौथी रात्रि से 16 वीं रात्रि तक का समय गर्भधारण करने के लिए उपयुक्त माना गया है| आपस्तंब और मनुस्मृति आदि ग्रंथों में तो यहाँ तक माना गया है कि पुरुष संतति के लिए सम रात्रि और स्त्री संतान के लिए विषम रात्रि का चुनाव किया जाता था|

पुंसवन संस्कार- गर्भधारण का निश्चय हो जाने के पश्चात यह संस्कार संपादित किया जाता है| पुंसवन का अभिप्राय सामान्यतः उस कर्म से था जिसमें पुं अर्थात पुरुष के जन्म की इच्छा छिपी हो| यह संस्कार गर्भधारण के तीसरे या चौथे मास में संपन्न किया जाता था| इसके अंतर्गत जब चंद्रमा पुरुष-नक्षत्र में हो उस दिन गर्भिणी स्त्री उपवास कर, स्नान कर, नए वस्त्र धारण करती थी| तब रात्रि में वट वृक्ष की छाल को कूटकर उसका रस निकाल कर स्त्री की नाक के दाहिने रन्ध्र में मंत्रोच्चारण के साथ छोड़ा जाता था| सुश्रुत के मतानुसार वट वृक्ष का रस गर्भपात निरोधक, पुंसंतति में सहायक एवं गर्भकालीन कष्टों के निवारण में सहायक होता है|

सीमान्तोन्नयन संस्कार- यह संस्कार भी किसी पुरुष-नक्षत्र के समय गर्भ के पांचवें-छठे महीने में इसे संपन्न किया जाता है| भावी माता उस दिन उपवास कर, स्नानादि कर विधि-विधान पूर्वक मातृपूजा, प्रजापत्य आहुति करती है| इसके बाद पत्नी कोमल आसन पर बैठ जाती है और पति 'भूर्भुवः स्वः' मंत्रोच्चरण करता हुआ पत्नी के सीमांतो (केशो) को ऊपर की ओर संवारता है, और पत्नी से संतित सौभाग्य और अपने (पति के) दीर्घायु की कामना करने के लिए कहता है| सुश्रुत ने एक गर्भिणी स्त्री के लिए इस दौरान कुछ नियमों का विधान किया है जैसे उसे मैथुन, अतिश्रम, दिवा-शयन, रात्रि-जागरण, अट्टालिकाओं व वाहनों पर चढ़ने, मुर्गे की तरह बैठने, रक्त बाहर निकालने तथा मल-मूत्र के असामयिक स्थगन आदि का वर्जन किया है|

जातकर्म संस्कार- बच्चे के जन्म लेते ही यह संस्कार प्रारंभ हो जाता है| बर्तनों को गर्म करने तथा माता और शिशु को धूम से पवित्र करने के लिए सूतीका - भवन में अग्नि प्रदीप्त की जाती है| उपयुक्त मंत्रों के साथ उसमें धान के कण और सरसों के बीजों की आहुति दी जाती है| इसके पश्चात पिता पुत्र का मुख देखने के लिए पत्नी के निकट जाता है, नवजात पुत्र का मुख देखते ही पिता समस्त ऋणों से

उऋण हो जाता है| तत्पश्चात पिता अपनी चौथी अंगुली और एक सोने की सलाका से शिशु को मधु और घृत अथवा केवल घृत चटाता है|

नामकरण संस्कार- प्रायः यह दृष्टिगोचर होता है कि शिशु के नाम का चुनाव सामान्यतः धार्मिक भावनाओं से जुड़ाव रहता है| किसी व्यक्ति का नाम देवताओं के नाम पर, रक्षक या किसी संत-महात्मा के नाम पर, किसी स्थान के नाम पर या उसके सुदूर पूर्वज के नाम पर रख दिया जाता है| गृह्य सूत्रों के अनुसार बालक का नाम सम संख्या में, व्यंजक से प्रारंभ हो, एवं नाम का अंत दीर्घ स्वर अथवा विसर्ग के साथ होना चाहिए| इसके साथ ही नाम में कृत प्रत्यय का प्रयोग किया जाता था| बालिका का नाम विषम संख्या वाला तथा अकारांत होना चाहिए और उसमें तद्धित प्रत्यय का प्रयोग होना चाहिए| मनु के अनुसार ब्राह्मण बालक का नाम मंगल सूचक, क्षत्रिय का नाम बल सूचक, वैश्य का नाम धन सूचक, तथा शुद्र बालक का नाम कुत्सा (निंदा, बुराई, घृणा) सूचक होना चाहिए| नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के दसवें अथवा बारहवें दिन सम्पन्न किया जाता है इस दिन माता स्वयं एवं शिशु को स्नान कराकर शुद्ध वस्त्र से ढककर तथा शिशु के सिर को जल से आर्द कर उसके पिता को हस्तांतरित करती है| पिता अपने इष्ट देवता, अग्नि और सोम की आहुति कर शिशु के दाहिने कान की ओर झुकता हुआ धीरे से उसके नाम का संबोधन करता है|

निष्क्रमण संस्कार- निष्क्रमण संस्कार करने का समय शिशु जन्म के बारहवें दिन होता है| संस्कार की नियत दिन माता बरामदे अथवा आंगन में ऐसे वर्गाकार भाग को जहाँ से सूर्य दिखाई दे, उसे साफ कर स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर धान्य कणों को विकीर्ण करती है| सूर्योदय काल में पिता के द्वारा शिशु को सूर्य दर्शन कराने के साथ यह संस्कार समाप्त होता है| अब माता भी प्रसूति - गृह में रहने की अवधि समाप्त होने के बाद उस कमरे से बाहर आती है और पुनः पारिवारिक जीवन में भाग लेना प्रारंभ करती है|

अन्नप्राशन संस्कार- अब तक शिशु अपने भोजन के लिए माता के दूध पर ही आश्रित था किंतु छह या सात माह के पश्चात उसका शरीर विकसित हो जाने के कारण उसे और अधिक भोजन की आवश्यकता होती है, दूसरी ओर माता के दूध की मात्रा भी घट जाती है, ऐसे में शिशु के लिए अन्य खाद्य की व्यवस्था को अन्नप्राशन का नाम दिया गया| यह संस्कार जन्म के छह माह पश्चात किया जाता था| किसी निश्चित तिथि को पिता द्वारा अपने शिशु जो की स्नानादि कर नये वस्त्र पहना हुआ है, के साथ हवन-यज्ञ करता है और शिशु को खिलाने के लिए भोजन को स्वाद के अनुसार पृथक-पृथक रखकर मौन पूर्वक अथवा 'हन्त' शब्द के साथ शिशु को भोजन कराता है| मार्कंडेय पुराण और अन्य सूत्रों के मे शिशु के भोजन में दही, मधु और घी के मिश्रण के साथ खीर खिलाने का विधान बताया गया है|

चूड़ाकरण संस्कार- गुह्य सूत्रों के मतानुसार चूड़ाकरण संस्कार जन्म के प्रथम वर्ष अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति के पूर्व संपन्न होता था| युग्म अथवा सम वर्षों में यह कार्य वर्जित था| चूड़ाकरण संस्कार के लिए एक शुभ दिन निश्चित कर माता उसे स्नान कराती और नए वस्त्र पहनाकर पिता के साथ यज्ञ में आहुतियाँ देती थी, तत्पश्चात केश विच्छेदन की क्रिया प्रारंभ होती थी| शिशु के सिर के ऊपर के केश कुल की परंपरा के अनुसार छोड़ दिए जाते थे| अंत में कटे हुए केशों को गोमय - पिंड के साथ छोटे तालाब में फेंक दिया जाता अथवा गोशाला में गाड़ दिया जाता था| निराशा, शिशुओं की मृत्यु, भाग्यवश संतति और देवताओं की मनौती आदि के कारण अब यह संस्कार मंदिरों में भी सम्पन्न किया जाने लगा है| **कर्णवेध संस्कार-** सुश्रुत का कथन है कि रोग आदि से रक्षा तथा अलंकरण के निमित्त बालक के कानों का छेदन करना चाहिए| कात्यायन सूत्र में कर्णवेध संस्कार का उपयुक्त समय तृतीय अथवा पंचम वर्ष का विधान है| इस संस्कार के लिए एक शुभ दिन मध्याह्न के पूर्व बालक को पूर्वाभिमुखी बैठाकर कुछ मिठाइयां दी जाती थी, इसके पश्चात सुई का काम करने वाले अथवा सुनार के द्वारा पहले दायां फिर बायां कान छेदन किया जाता था| स्मृतिकारों ने तांबे की सूचिका का विधान किया हैं, किंतु कहीं कहीं राजपुत्र के लिए स्वर्णमयी सूची, ब्राह्मण व वैश्य के लिए रजत निर्मित सूची तथा शुद्र के लिए लौह सूचिका का विधान मिलता है|

विद्यारंभ संस्कार- इस संस्कार का उद्भव सभ्यता के अत्यंत उन्नत अवस्था में हुआ, जब वर्णमाला का विकास हो चुका था| प्राचीन लिपिमाला में रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने साहित्य साक्ष्य के आधार पर यह सिद्ध किया है कि भारत में लेखन कला

उत्तर संहिता काल (1600 से 1200 ईसा पूर्व) में ज्ञात थी| विश्वामित्र विद्यारंभ संस्कार बालक की आयु के पांचवें वर्ष में किया जाना उचित मानते हैं| इस संस्कार के लिए कोई शुभ दिन निश्चित कर जब सूर्य उत्तरायण में हो बालक को स्नान कराकर नए वस्त्र पहनाकर विनायक, सरस्वती, बृहस्पति और गृह देवता की पूजा कराई जाती थी और होम कराया जाता था| गुरु जो की पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे होते है, पश्चिम की ओर मुख करके बैठें हुए बालक को अक्षरारंभ कराता था और 'ओम नम: सिद्धाय' लिखवाता था| अंत में गुरु को एक पगड़ी या साफा भेंट किया जाता था|

उपनयन संस्कार- उपनयन का शाब्दिक अर्थ है गुरु या ज्ञान के समीप ले जाना| इस संस्कार में बालक को आध्यात्मिक और शैक्षणिक जीवन के लिए तैयार किया जाता है| इस संस्कार के अंतर्गत बालक को ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश दिलाया जाता है और उसे यज्ञोपवित (जनेऊ) धारण कराकर वेदाध्ययन के लिए योग्य बनाया जाता है| उपनयन केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं होता, वह कृत्य जिसके द्वारा व्यक्ति गुरु, वेद, यम नियम का व्रत और देवता के सामीप्य के लिए दीक्षित किए जाएं उपनयन है| गृहसूत्रों के समय में उपनयन संस्कार प्रत्येक द्विज के लिए अनिवार्य था| गृहसूत्रों में यह नियम था कि ब्राह्मण बालक आठवें वर्ष, क्षत्रिय का ग्यारहवें वर्ष और वैश्य का बारहवें वर्ष उपनयन संस्कार कराना चाहिए| उपनयन में यज्ञोपवित धारण करना अनिवार्य था, अतः धर्मशास्त्रों के नियमानुसार ब्राह्मण बालक को कपास का, क्षत्रिय को सन का तथा वैश्य को भेड़ के ऊन का उपवीत धारण करना चाहिए| इसकी लम्बाई एक मनुष्य की चार अंगुलियो की चौड़ाई की 96 गुनी होती है, जो उसकी लंबाई के बराबर है| उपवीत में प्रयुक्त तीन धागे सत्व, रजत तथा तमस् का प्रतिनिधित्व करते हैं| इसके साथ ही साथ ये तीन सूत्र (धागे) उसके धारण करने वाले को यह स्मरण कराते हैं कि उसे ऋषि ऋण, पितृ ऋण और देव ऋण से उऋण होना है|

वेदारम्भ संस्कार- बालक का गुरुकुल में जाना ही उपनयन था, जिसके तत्काल बाद विद्यार्थी जीवन का प्रारंभ होता था| यह विशुद्ध शिक्षा संबंधी संस्कार था, जिसमें विद्यार्थी वैदिक स्वाध्याय आरंभ करता था| वेदारंभ संस्कार में भी विधि-विधान के साथ किसी शुभ दिन का निश्चय कर गुरु अग्नि की प्रतिष्ठा कर विद्यार्थी को बुलाकर अग्नि के पश्चिम में बैठाता था और आहुतियाँ दिलवाता था| इसके भी नियम थे यदि ऋग्वेद आरंभ करना है तो घृत की दो आहुतियाँ अग्नि और पृथ्वी को दी जाती थी, यदि यजुर्वेद तो अंतरिक्ष और वायु को, यदि सामवेद तो धैउ और सूर्य को और यदि अथर्ववेद आरंभ करना होता है तो दिशाओं और चंद्र को आहुतियाँ दी जाती थी| और यदि सभी वेदों का अध्ययन एक साथ आरंभ करना होता है तो सभी आहुतियाँ साथ ही दी जाती थी|

केशांत संस्कार- इसे गोदान संस्कार भी कहते हैं, क्योंकि इस अवसर पर आचार्य को गौ दान किया जाता था| यह संस्कार 16 वर्ष की आयु में संपन्न किया जाता था तथा यह यौवन के पदार्पण का सूचक संस्कार था| ब्रह्मचारी अब बालक नहीं रहता था उसके मूंछ और दाढ़ी निकल आते थे, अतः ब्रह्मचारी को एक बार पुन ब्रह्मचर्य के व्रतों को याद दिलाना आवश्यक था| इस संस्कार में ब्रह्मचारी के दाढ़ी - मूंछों का क्षौर होता था और वह एक वर्ष पर्यंत कठोर अनुशासित जीवन व्यतीत करता था|

समावर्तन संस्कार- यह संस्कार ब्रह्मचर्य की समाप्ति और विद्यार्थी जीवन के अंत का सूचक है| इसे स्नान संस्कार भी कहते हैं, क्योंकि यह इस संस्कार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है| अध्ययन की तुलना एक सागर से की जाती थी और जो व्यक्ति विधाओं का अध्ययन कर प्रकांड पंडित हो जाता था तो यह माना जाता था कि वह विद्या के सागर को पार कर लिया है, वह विद्या - स्नातक (जिसने विद्या में स्नान कर लिया हो) है| इस संस्कार की उम्र में समयानुसार परिवर्तन होता रहा है| विद्यार्थी तथा उसके माता-पिता की परिस्थिति के अनुसार 36, 24 या 18 वर्ष में संपन्न हो जाता था| अधिकांशतः यह 24 वर्ष की आयु में सम्पन्न कर लिया जाता था| इस संस्कार के शुभ दिन विद्यार्थी अपने गुरु की अनुमति से कुछ समिधाओं द्वारा वैदिक अग्नि को अंतिम आहुति प्रदान कर, वहाँ रखे हुए जलपूर्ण आठ कलश से मंत्रोच्चारण के साथ स्नान कर वेशभूषा से अलंकृत होकर गुरु को ससम्मान गुरु दक्षिणा देकर प्रणाम करता था और गुरु आज्ञा से अपने घर की ओर प्रस्थान करता था|

विवाह संस्कार- विवाह का हिंदू संस्कारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है| विवाह स्वयं एक यज्ञ माना जाता था और जो व्यक्ति विवाह कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश नहीं करता था उसे यज्ञहीन कहा जाता था| अतः गृहस्थ के लिए अविवाहित रहना एक गंभीर पाप समझा जाता था| विवाह केवल एक सामाजिक अनुबंध ही नहीं है, बल्कि यह एक धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान है| जो पति-पत्नी को आजीवन एक दूसरे के साथ जोड़ता है| विवाह के लिए उद्वह शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है कन्या को पिता के घर से विदा कर वर के साथ ले जाना| सुश्रुत के अनुसार 25 वर्ष के पुरुषों को 16 वर्ष की स्त्री से विवाह करना चाहिए|

अंत्येष्टि संस्कार- हिंदू के जीवन का अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि है| इसके साथ ही उसके इस दैहिक जीवन का अंतिम अध्याय समाप्त हो जाता है| व्यक्ति के मरणोपरांत होने पर भी इस संस्कार का एक अलग महत्त्व है, क्योंकि हिंदू के लिए इस लोक की अपेक्षा परलोक का मूल्य उच्चतर है| आदिम विश्वास के अनुसार मृत्यु के साथ मनुष्य का पूर्णतः अंत नहीं हो जाता बल्कि इस प्रक्रिया में मृत्यु के द्वारा आत्मा शरीर के पृथक हो जाता है| इस संस्कार के अंतर्गत व्यक्ति के मृत शरीर को वैदिक मंत्रोचार के साथ विधिविधान पूर्वक मृत शय्या (चिता) पर लिटा दिया जाता था और ज्येष्ठपुत्र या उत्तराधिकारी के द्वारा चिता पर आग लगा दी जाती थी| संक्रामक रोगों से मृत व्यक्ति, गर्भिणी स्त्रियों तथा नवजात शिशुओं का दाहक्रिया नहीं किया जाता था|

संस्कारों की उपयोगिता एवं ह्रास- संस्कार मानव जीवन को परिष्कार और शुद्धि से सहायता पहुचाते, व्यक्तित्व के विकास को सुविधाजनक करते और जीवन की जटिलताओं को सरल बनाते थे| उदाहरणार्थ जब स्वास्थ्य-विज्ञान और प्रजनन-शास्त्र आम जनमानस तक नहीं पहुंचता था उस समय यह संस्कार ही इन विषयों पर ज्ञान कराते थे| इसी प्रकार विद्यारम्भ, उपनयन तथा समावर्तन आदि संस्कार शिक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व के थे| आदिम समाजों में अनिवार्य शिक्षा को लागू करने के लिए कोई धर्मनिरपेक्ष माध्यम नहीं था ये संस्कार ही शिक्षा की अनिवार्यता को प्रस्तुत करते थे| शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से अयोग्य बालक को भी शिक्षा के अनिवार्य पाठ्यक्रम से होकर गुजरना पड़ता था, जिसमें अध्ययन तथा कठोर अनुशासन का समावेशन था| विवाहों के प्रकार, उसकी सीमाएं, वैवाहिक विधि-विधान आदि स्त्री-पुरुषों में यौन समस्या तथा अन्य सामाजिक समस्याओं का नियमन करते थे| अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि मृतक तथा जीवन के प्रति गृहस्थ के कर्तव्यों में सामंजस्य स्थापित करते थे| इस प्रकार संस्कारों का यह पुंज मानवजीवन तथा उनके विकास के लिए एक क्रमबद्ध योजना का कार्य करते थे|

अन्य सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के समान दीर्घकाल तक अपने प्रयोजन की पूर्ति के पश्चात इन संस्कारों का भी धीरे-धीरे ह्रास हुआ| संस्कार जो किसी समय मनुष्य के सुधार की दिशा में एक गंभीर प्रयास थे अब केवल एक सामान्य विधि-विधान मात्र रह गये| इसके अनेक कारण दृष्टिगत होते हैं| प्रथम तो भाषागत जटिलता है संस्कारों में पढ़े जाने वाले मंत्र, वेदों, गृहसूत्रों तथा प्राचीन ग्रंथों से लिए गए थे जो संस्कृत भाषा में थे| कालांतर में संस्कृत भाषा भारत की लोकप्रिय एवं प्रचलित भाषा नहीं रह गई और पुरोहितों ने भी संस्कारों की इस भाषा में परिवर्तन करने का प्रयत्न नहीं किया (क्योंकि वे धार्मिक विधि-विधानों का रहस्य और अस्पष्ट प्रकृति को सदैव बनाए रखना चाहते थे)| भाषा के बोधगम्य न होने के कारण संस्कारों के प्रति जन साधारण में अरुचि और उदासीनता बढ़ती चली गई, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा अन्य अनेक भक्ति मार्गों ने भी जनसाधारण का ध्यान कर्मकांडीय जटिलता से हट कर भक्ति के अन्य प्रकारों और पूजा अर्चन की ओर आकृष्ट किया| भारत में इस्लाम धर्म के पदार्पण ने तो हिंदू संस्कृति को आच्छन्न ही कर दिया और अधिकांश जन समुदाय डर वश धार्मिक विधि-विधानों और कर्मकांडों को त्याग दिया| पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने भी हमारी सनातनी परंपरा को काफी हद तक परिवर्तित किया है| वैज्ञानिक आविष्कारों ने धार्मिक आतंक तथा श्रद्धा जिसके साथ धार्मिक कृत्य संपन्न किये जाते थे उसे धीरे-धीरे क्षीड़ करता जा रहा है| इन सबके बावजूद भी मनुष्य जीवन के लिए जीवन का संस्कार तथा परिष्कार अपेक्षित रहेगा, संस्कारों की प्राचीन रूपरेखा में परिवर्तन तो होगा, लेकिन समय की आवश्यकता के अनुरूप संस्कारों का नवीन रूप भी प्राप्त होगा| समाज के विचारक वर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग का यह नैतिक उत्तरदायित्व भी है कि वे मानव जीवन के लिए धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा करें|

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1- पाण्डेय, रवि प्रकाश (2022). भारत में समाज : संरचना, संगठन एवं परिवर्तन , वाराणसी : विजय प्रकाशन मन्दिर |
2- पाण्डेय, राजबली (2019). हिन्दू संस्कार , वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन |
3- सिंह, जे०पी० (2019). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन , दिल्ली : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड |
4- आहूजा, राम (2019). भारतीय सामाजिक व्यवस्था , नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स
5- रावत, हरिकृष्ण (2015). उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश , नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन्स |
6- सरस्वती, स्वामी दयानंद (2010). सत्यार्थ प्रकाश , नई दिल्ली : आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट |
7- तिवारी, ए०के० (2010). समाजशास्त्र , इलाहाबाद : बौद्धिक प्रकाशन |
8- गुप्ता, एम०एल० एवं शर्मा डी०डी० (1996). समाजशास्त्र , आगरा : साहित्य भवन पब्लिकेशन्स |
9- https://hi.wikipedia.org/wiki/सनातन_धर्म_के_संस्कार. Retrived on 10/06/2025.
10- https://www.youtube.com